5वीं मासिक पुण्य तिथि

आचार्य महाप्रज्ञ के पास मिलता था समस्याओं का समाधान : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 4 अक्टूबर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की सबके उपर करुणा बरसती थी। उनके पास हर समस्या वाले लोग आते थे। वे प्रत्येक समस्या सुनते और उसका समाधान प्रदान करते थे। जो मन का संयम करता है वह सिद्ध पुरुष बन जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने स्वयं साधना की एवं दूसरों का पथ दर्शन भी किया।

उक्त विचार उन्होंने स्थानीय तेरापंथ भवन में आचार्य महाप्रज्ञ की 5वीं मासिक पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि दूसरों को दु:ख न देना अहिंसा की बात है। जो अहिंसा की साधना करता है उसके पास हिंसा-अहिंसा का ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान प्रकाशकर है। जिसके पास ज्ञान का लालटेन होता है वह अहिंसा को सूक्ष्मतया जी सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ स्वयं ज्ञानवाल थे। उन्होंने अपने जीवन अधिकांश समय ज्ञानाराधना में लगाया और कितने ही लोगों को दर्शन आदि की बातें बताई। उनके साहित्य से ज्ञान प्राप्त होता है।

मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का जीवन पुरुषार्थमय था। जब अंतराय कर्म विलय की तरफ होता है तो पुरुषार्थ घटित होता है, उन्होंने अध्ययन के क्षेत्र में पुरुषार्थ किया। पढ़ी हुई प्रत्येक पंक्ति की तह तक जाने का प्रयास करते थे। आज के कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण ने छापर निवासी किरणदेवी नाहटा को 'तपोनिष्ठ श्राविका' संबोधन से संबोधित किया। हैदराबाद से 70 व्यक्तियों का संघ दक्षिण पधारने की अर्ज लेकर उपस्थित हुआ।

महिला शक्ति का अधिवेशन सज़्पन्न

महिलाओं में हो मनोबल का विकास : आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के 35वें वार्षिक अधिवेशन में देशभर से पहुंची महिला शक्ति को संबोधित करते हुए कहा कि महिलाओं में मनोबल का विकास होना

चाहिए। उन्होंने कहा कि अधिवेशन सज़्पन्न हो रहा है। अधिवेशन नई प्रेरणा लेकर नये उत्साह के साथ काम करता है, जब नया किया जाता है तो आलोचना होना स्वाभाविक है, पर आलोचना से डरना नहीं है। अच्छे कार्यों से मण्डल को आगे बढ़ाना है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा महिला मण्डल प्रभारी साध्वी कल्पलता की उपस्थिति में हुए इस अधिवेशन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की ओर से दिल्ली से श्रीमती सायर बैंगानी को श्राविका गौरव पुरस्कार एवं प्रतिभा पुरस्कार जयपुर की श्रीमती कल्पना जैन को प्रदान किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा ने आगामी वर्ष में करणीय कार्यों पर प्रकाश डाला। महामंत्री वीणा बैद ने अधिवेशन की समीक्षा प्रस्तुत की। अधिवेशन के प्रायोजक मूलचन्द विजयादेवी मालू, सुमतिचन्द गोठी, बिमलकुमार नाहटा का मण्डल की ओर से प्रतिक चिन्ह देकर सज़्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सूरज बरड़िया ने किया।

मालू कुंज में आयोजित अधिवेशन के एक रात्री कालिन सत्र में साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि वह महिला रक्षित होती है जो विपरीत स्थिति आने पर भी विचलित नहीं होती और शरीर बल से ज्यादा मनोबल को अधिक महत्वपूर्ण मानती है, जिसकी संकल्प शक्ति मजबूत होती है। हंस मनीषा के द्वारा हेय ज्ञेय उपादेय का विवेक रखना रक्षिता होने की पहचान है, साध्वी कल्पलता ने कहा कि जो रिश्तों को ईमानदारी से जीना सीख लेता है वह सहज सरल बन जाता है। आज सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रक मूल्यों के प्रति अटूट निष्ठा की जरूरत है। संस्था की ट्रस्टी श्रीमती शांता पुगलिया ने महिलाओं को अधिकार कर्तव्य और दायित्व के प्रति सजग किया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने पावर पोइंट के द्वारा आदर्श मां, सास, बहू, बेटी और श्राविका की महत्वपूर्ण भूमिकाओं को विस्तार से समझाया राजसमंद की प्रतिनिधियों ने मंगल संगान की प्रस्तुति दी। इस मौके पर विविध प्रतियोगियों एवं मासिक चिन्तन गोष्ठियों के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। संचालन श्रीमती अंजु बैद ने किया।

30 सितज़्बर को पूर्व सन्ध्या में परिचय सत्र रखा गया, जिसमें सभी शाज़ा मण्डलों एवं राष्ट्रीय कार्य समिति का आपसी सौहार्दमय परिचय हुआ। गंगाशहर महिला मण्डल द्वारा मंगल संगान के उपरान्त निर्वतमान अध्यक्ष श्रीमती सौभागजी बैद ने स्नेहमय संभाषण के साथ सबका स्वागत किया। साध्वी प्रमुखा महाश्रमणीजी ने कहा कि विकास तीन स्तरों पर हो – व्यक्तिगत, महिला समाज का और धर्मसंघ का। इस बार की थीम रक्षिता समायोपयोगी है, क्योंकि विकास के साथ ही साथ उसकी सुरक्षा भी आवश्यक है – विकास की अंधी दौड़ में महिला अपनी अस्मिता की सुरक्षा भी करे – उड़ान भरें पर पैर यथार्थ के ठोस

धरातल पर जमे रहे। नवयुवतियां संज़्या से जुड़ रही है वह एक प्रशंसनीय बात है। मण्डल प्रभारी साध्वीश्री कल्पलताजी ने कहा कि महिलाओं के संगठन की मजबूती से स्वपर्यव विकास की खुशबू आती है आज हर क्षेत्र में बहने सक्षमता से कार्य कर रही है, अत: आज का दिन धन्यवाद ज्ञापन और अभिनन्दन का दिन है। अपनी उपलब्धियों को देखकर, बाधाओं को गौण करते हुए, शक्ति संचय कर पूज्यवर के सपने साकार करने हैं। साध्वीश्री जिनप्रभाजी ने दिशा बोध प्रदान कर तत्वज्ञान अध्ययन से दिशा व दशा परिवर्तन करने की प्रेरणा दी। महामंत्री श्रीमती वीणा बैद ने रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं बहनों की आस्थामय गहराई की प्रशंसा की सभी प्रतिनिधियों का परिचय करवाया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा ने कार्य समिति का परिचय कराया व कहा कि एकांगी विकास से पंगुता आ सकती है अत: हमें आध्यात्मिक एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में विकास करना है।

'समर्पण रैली' के रूप में बहनें आचार्य प्रवर की जयनाद के घोषों के साथ प्रवचन स्थल में पहुंची एवं आशीर्वचन प्राप्त किया। आचार्यश्री ने महिला शक्ति को धर्मसेवा बताते हुए कहा कि समर्पण एक ऐसा अस्त्र है जिससे बुराइयां एवं कुरूढ़ियों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। महिलाओं को मनोबल के साथ काम करते रहना है।

दिनांक 2 अक्टूबर। स्थानीय तेरापंथ भवन में विराजित आचार्य महाश्रमणजी की सन्निधि में आयोजित हो रहे अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के त्रिदिवसीय अधिवेशन के दूसरे दिन साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के समक्ष संगठन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें 'कैसे जोड़ें युवा पीढ़ी को' विषय पर प्रेरणा देते हुए महाश्रमणीजी ने कहा कि एक आचार्य की अनुशासना एवं एक छत्र विधान की छाया में महिलाओं को अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को कायम रखना है, संवर्धन करना है। आज भी इतने ऊंचे विकास को हासिल करने के बावजूद भी उन्हें पुरुषार्थी समाज दोयम दर्जा देता है। आज पूरी युवा पीढ़ी को हमें अध्यात्म से जोड़ना है तो उनके साथ अधिकतम संवादिता कायम करनी होगी। संवाद से संस्कारों का संप्रेषण आसान हो सकता हे एवं हमारी युवा पीढ़ी हमारी मनचाही दिशाओं में झुकाव पा सकती है। आपने दूसरा उपाय सुझाया कि हमारा युवा वर्ग जो कार्य कर रहा है उसकी वर्जना करने की बजाय हमें उसी दिशा में और अधिक बेहतर परिणामी करणीय कार्य का सुझाव देना चाहिए। मण्डल प्रभारी साध्वीश्री कल्पलताजी ने कहा कि जैन संस्कारों को सुरक्षा देकर हाऊस वाईफ होकर भी एक महिला एक फुल टाईम जोब वाली महिला के बराबर दायित्व निर्वहन करती है और 'रक्षिता' का किरदार निभा सकती है।

आज के इस विषय पर सुप्रसिद्ध कुशल वक्ता श्री शांतिलाल जी मूथा ने अपने विशिष्ट विचारों की खुराक से सभी को संपोषण दिया। युवा पीढ़ी को जीवन में कुछ नया मोड़ देने के लिए आपने बताया कि आज से 30 वर्ष पहले जो स्थिति थी उसमें लगभग बच्चों को परिवार के सुप्रीमों (मुखिया) का हर आदेश निर्णय स्वीकार करना ही पड़ता था लेकिन आगामी बीस वर्ष बाद भी जो स्थिति होगी उसमें हमारी भावी पीढी को अत्यन्त उच्छृंखल हो जाने की संभावना है, आज का जो समय है उसमें कुछ करना अनिवार्य है। जैसे रिश्तों में गहरा विश्वास रहे केवल हमसफर ही नहीं हमदर्द भी बनें। जैसे अग्निशमन दल के व्यक्ति आग में ट्रेनिंग का कवच पहनकर कूद जाते हैं व बचाव करते हैं, उसी तरह हमें अपने अहिंसा के पुजारी पैदल भ्रमण कर रहे अनुभव अध्यात्म सज़्पन्न गुरुजनों के पास जीवन की कला का प्रशिक्षण लेना चाहिए ताकि जीवन की विसंगतियों व परिस्थितियों में अडिग रह मुकाबला कर सकें।

कार्यक्रम की शुरूआत में मुज़्बई महिला मण्डल की प्रतिनिधियों ने मंगल गीत प्रस्तुत किया। मंच संचालन राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्रीमती मधु देरासरिया ने किया। राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती वीणा बैद ने श्री शांतिलाल मूथा का विशद व्यक्तित्व परिचय दिया एवं सबका स्वागत किया। सज़्मानित अतिथि को स्नेह प्रतीक भेंट किया गया।

मध्यान्ह के सत्र में 'विजन-विकास' हेतु ग्रुप डिस्कशन रखा गया। 14 ग्रुप में सभी क्षेत्रों को विभाजित किया गया एवं संस्था तथा इससे संबंधित विविध विषयों पर प्रश्नों के समाधान निकाले गए।

मंगल संगान बैंगलोर महिला मण्डल द्वारा प्रस्तुत किया गया एवं संयोजन राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्रीमती रीना जैन ने किया तथा इसमें समन्वयक बनी स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज योजना प्रभारी श्रीमती कल्पना बैद एवं उपाध्यक्ष श्रीमती सुनीता जैन।

महामंत्री श्रीमती वीणा बैद ने 'विजन विक्ट्री' का समझाया और कार्यक्रम आयोजना हेतु दिशा बोध दिया तथा कहा कि किस प्रकार से कार्यक्रम की रिपोर्ट आदि केन्द्र में भेजनी चाहिए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा ने स्नेहभरी बातचीत करते हुए सभी बहनों को आगे बढ़ने की एक अभिनव प्रेरणा दी और आपसी संवाद वार्तालाप हेतु सभी को आह्वान किया।

त्रिदिवसीय पारिवारिक सौहार्द कार्यशाला आज से

तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में 5 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक एक त्रिदिवसीय पारिवारिक सौहार्द कार्यशाला आयोजित की जाएगी जिसका समय मध्याह्न 2 बजे से 4.30 बजे तक का रहेगा। इसका आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मण्डल, आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति व जीवन विज्ञान अकादमी द्वारा होगा। इसमें प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल, मुनि दिनेशकुमार, मुनि कुमार श्रमण, मुनि हिमांशुकुमार आदि संतों द्वारा पारिवारिक समस्याओं पर समाधान प्रस्तुत करेंगे।

वर्ग पहली प्रतियोगिता का आयोजन

तेरापंथ भवन में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तेरापंथ किशोर मण्डल के द्वारा वर्ग पहली प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। सीनियर वर्ग में चौबीस तीर्थंकरों एवं दस आचार्यों के नामों को खोजना और जूनीयर वर्ग में नमस्कार महामंत्र को खोजना प्रतियोगिता का मूल उद्देश्य था। इस प्रतियोगिता में 100 प्रतियोगियों ने अपना भाग्य अजमाया। किशोर मण्डल के संयोजक शुभम बरड़िया के अनुसार प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग से प्रथम चन्द्रप्रकाश सेठिया, द्वितीय गुंजन कुण्डलिया, तृतीय चन्द्रप्रकाश सज्जतमल सेठिया ने प्राप्त किया।

जूनियर वर्ग से प्रथम प्रज्ञा बुच्चा एवं सिद्धिता बरड़िया, द्वितीय पुजा सेठिया एवं तृतीय स्थान निधि बोथरा ने प्राप्त किया। इन प्रतियोगियों को तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में किशोर मण्डल द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा। इस प्रतियोगिता को सफल बनाने में किशोर मण्डल प्रभारी सुमति बोथरा, तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष विनीत पींचा, किशोर मण्डल संयोजक शुभम बरड़िया, सहसंयोजक श्रेयांस बरड़िया, अमीत दस्साणी मनन बरड़िया, सिद्धांत बरड़िया का श्रम नियोजित हुआ।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)